

12, 18943. *gestehen, beichten* VJUTP. 196.

— सम् 1) *anweisen, zuweisen*: ऋषये संदिदेशासनम् R. 1, 2, 29. (आत्रे) राष्यं संदिश्ये BHATT. 6, 141. *zuzweisen so v. a. für Jmd bestimmen, zu geben versprechen*: संदिष्टस्याप्रदाता JĀG. 2, 232. — 2) *erklären, einen Ausspruch thun, eine Anweisung —, einen Auftrag geben*: हृत्तैर्मधुरसंभाषिर्नैतदिति संदिशन् MBH. 5, 7435. 7050. ÇĀK. 54, 22. PRAB. 70, 4. BHĀG. P. 4, 25, 1. ÇĪC. 9, 61. आदिशत्सर्वं यथासंदिष्टमिष्टवत् R. 2, 82, 22. *Jmd Etwas bedeuten, zu wissen thun, auftragen*: राजा — तव संदिष्टवानिदम् KATHĀS. 14, 2. इदं मो संपरिष्वज्य संदिदेश R. GORR. 2, 58, 15. *Jmd anweisen, einen Befehl ertheilen, beauftragen* MBH. 1, 682. 3, 1847. 2633. 2655. HARIV. 8480. 8498. R. 2, 100, 2. R. GORR. 2, 38, 36. 3, 60, 22. 4, 1, 32. 28, 29. MĀLAY. 49, 12. BHĀG. P. 3, 4, 32. न त्वा संदिष्टुमर्हामि भर्तृन्प्रति *ich brauche dir keine Anweisungen zu geben in Betreff der Gatten* MBH. 2, 2588. फाल्गुनं चापि संदिदेश कृयान्प्रति 14, 2104. अग्निहृति काचिदिति संदिदेशो *gab einer Botin diesen Auftrag* ÇĪC. 9, 56. *Jmd Etwas anbefehlen, auftragen*; mit dopp. acc.: (तौ) संदिदेशेतिकर्तव्यम् MBH. 3, 16407. संदिष्ट्यासि यानर्थास्तान्त्राप्यास्तथा तथा R. 2, 82, 59. *Jmd mit einem Auftrage zu Jmd (dat.) abordnen*: विश्वात्मने गौरी संदिदेश मिथः सखीम् KUMĀRAS. 6, 1. — *caus. Jmd auffordern eine Erklärung zu geben, sich über Etwas auszusprechen*: संदिशित MBH. 14, 458. — Vgl. संदेश, संदिष्टव्य.

— अनुसम् *überweisen*: तानु ते सर्वाननुसंदिशामि AV. 4, 16, 9.

— प्रतिसम् 1) *Jmd (acc.) einen Rückauftrag geben*: प्रतिसंदिश माम् R. 6, 98, 37. 1, 80, 32 (GORR.). *an Jmd, mit dem gen.*: प्रतिसंदिश्य वै कावेः MBH. 1, 5855. *प्रतिसंदिश्यतां* (impers.) तावद्भर्तुः BHATT. 8, 123. — 2) *Jmd anweisen*: इति स एवं प्रतिसंदिश्योतङ्कम् MBH. 1, 748. — Vgl. प्रतिसंदेश.

2. दिष् (= 1. दिष्) f. P. 3, 2, 59. VOP. 3, 134. 164. SIDDH. K. 247, b, 5 v. u. 1) (*wohin man zeigt*) *Richtung; Himmelsrichtung, Himmelsgegend* (pl. = सर्वा दिशः) AK. 1, 1, 2. H. 166. प्रज्ञानतोव न दिशो मिनाति RV. 1, 124, 3. 3, 30, 12. दिशं न दिष्टमज्ञूयेव यतां 1, 183, 5. क्षेत्रविद्धि दिशं आर्हा विपृक्ते 9, 70, 9. AV. 3, 31, 4. 11, 2, 12. गच्छानया दिशा KATHĀS. 10, 119. दिक्सम *gleiche Richtung habend* SŪRJAS. 4, 25. दिक्तुल्य 7, 12. दिक्साम्य 3, 17, 5, 4. 12. दिग्भेद 2, 58, 3, 16. 18. दिशः स्वरूपसः RV. 6, 60, 2. VS. 6, 36. वाता वातु दिशो दिशः AV. 4, 15, 8. 10, 3, 10. ÇAT. BR. 1, 2, 5, 17. 13, 5, 2. 8, 1, 5. 14, 6, 7, 14. ĀÇV. GRHJ. 2, 4. 4, 9. ÇĀNHU. GRHJ. 1, 19, 2, 14. यदास्य दिशो दक्षति SHADY. BR. 5, 9; vgl. u. दाक्ष. रत्नानां दिशो द्रष्टा SŪCĀ. 4, 121, 14. 113, 14. सर्वा दिशो जित्वा SUND. 2, 26. दिशः प्रसेडुः RAGH. 3, 14. मूर्खस्य दिशः प्रून्याः MRĀKĀH. 2, 10. दिशो चीन्ते वाप्यधः *in's Blaue hinein sehen* (vgl. दिग्विलोकन) PAÑĀT. II, 64. दिशः संपूरयन्नादिः INDR. 1, 3. दिनु ह्वनीति विभ्रुतः MBH. 5, 5351. MEGH. 25. दिग्भ्यः *von allen Weltgegenden* BHĀG. P. 1, 13, 8. यथा मृगणांस्त्रस्तान्मिहे द्रावयते दिशः MBH. 8, 2748. (तानु) दिशः प्रस्थापयामास R. 1, 1, 69. ततो भग्ना नृपतयो ह्यन्यमाना दिशो ययुः 66, 25. विप्रहृता भीताः — दिशः 55, 22. दिशो जग्मुः 59, 9. 97, 9. 6, 95, 4. DRAUP. 8, 40. दिशो दिशो जग्मुः PAÑĀT. 129, 20. दिशो भेजुः BHĀG. P. 4, 4, 34. विद्वन्विति भयाह्वीता नानादिग्भ्यः R. 1, 55, 23. ययुर्हृष्टाः — सर्वतो दिशम् N. 16, 5; vgl. गृहीतदिष्. दिशि दिशि *allerwärts* BHARTĀ. 1, 86. *vier Richtungen*: प्राची, दक्षिणा, प्रतीची, उदीची AV. 15, 2, 1. fgg. ĀÇV. GRHJ. 4, 8. RAGH. 3, 30. चतुर्दिक् KATHĀS. 15, 137.

*fünf* (die vorigen mit der ध्रुवा) AV. 8, 9, 15. 13, 3, 6. 15, 14, 1. fgg. VS. 9, 32. ÇAT. BR. 9, 4, 2, 10. ÇĀNHU. ÇĀ. 4, 11, 3. fgg. *sechs* (die vorigen mit der ऊर्धा) AV. 3, 27, 1. 12, 3, 55. fgg. 15, 4, 1. fgg. ÇAT. BR. 14, 6, 11, 5. *sieben* (die vorigen mit der व्यधा) AV. 4, 40, 1. fgg. ÇAT. BR. 9, 3, 2, 8. TAITT. ĀR. 1, 7. KAUC. 116. *acht* (die vier zuerst genannten nebst den zwischenliegenden SO. SW. NW. NO.) M. 1, 13. *zehn* (die acht vorhergehenden nebst तिर्यक् und ऊर्ध्वम् oder अथस् und ऊर्ध्वम्) ÇAT. BR. 6, 2, 2, 34. 8, 4, 2, 13. MBH. 1, 729. 3, 10667. आरुह्य वृत्तं मात्रेय निर्गन्तस्व दिशो दश 17246. 5, 305. N. 24, 22. अथ भीताः पलायन्तामर्यस्ते दिशो दश R. 2, 106, 27. 3, 54, 7. 6, 2, 19. 36, 107. एता दश दिशो भेदे कार्यमस्ति न मे त्वया so v. a. *gehe wohin es dir beliebt* 100, 18. MRĀKĀH. 123, 23. RAGH. 8, 29. BHĀG. P. 2, 7, 20. दशदिशि प्रधाविताः VET. 14, 2. *Daher zur Bezeichnung der Zahl zehn* ÇĀUT. 36. SŪRJAS. 2, 24. 8, 6. *zehn Weltgegenden* ausser तिर्यक् und ऊर्ध्वम् MBH. 3, 856. दिशो पतिः *heisst Soma* RV. 9, 113, 2. Rudra VS. 16, 17; vgl. दिक्पति u. s. w. दिशो प्रियतमः Bein. Çiva's H. c. 46. दिशामुदीची (*Zenith*) — राजा MBH. 14, 1179. दिशो च प्रदिशो चोर्ध्वं दिक्पूर्वा प्रथमा तथा 1224. प्रदिशो दिशश्च AV. 5, 28, 2. 9, 2, 21. दिशश्च विदिशश्चैव HARIV. 11000. दिशामन्तेर्दिशाः AV. 4, 40, 8. 5, 10, 7. *Die दिशः unter den देवा वैकारिकाः* BHĀG. P. 2, 3, 30. दिशो व्रतं दशानुगानम् N. eines Sāman Ind. St. 3, 219. *Am Ende eines adj. comp.* VID. 101. *am Ende eines adv. comp.* दिशम् गाणा शरदादि zu P. 5, 4, 107. VOP. 6, 62. — 2) *die Fremde* (vgl. दिग्गतरः) दिगागत, दिग्लाम JĀG. 2, 254. — 3) *Andeutung, Hinweis*: यमनद्रव्ययोगानां दिगियं संप्रकीर्तिता SŪCĀ. 1, 160, 9. अनैवैव दिशा KULL. zu M. 7, 126. मुनेः पठितादिशा SIB. D. 18, 5. इत्युक्तदिशा 23, 22. 24, 9. दिश्यात्रम् 60, 15. Schol. zu KĀTJ. ÇĀ. 24, 7, 22. दिगियं सूत्रकृता प्रदर्शिता । प्रयोजनानि त्वस्यान्यानि बहूनि Schol. zu VS. PAÑT. 4, 179 in Ind. St. 4, 280. दासीसभं नृपसभं रत्नःसभमिमा दिशः *dieses sind Hinweise* 80 v. a. *einzelne Beispiele* AK. 3, 6, 2, 27. 2, 6. 6, 40. — 4) *Vorschrift, Ordnung; Art und Weise*: ऐभ्यः समान्यां दिशास्मभ्यं जेषि योतिंस च RV. 1, 132, 4. पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानामनुत्प्रशासिद्धि दधावनुष्टु 93, 3. 4, 29, 3. जिह्वं नुनुद्रे ऽवतं तयो दिशासिञ्चुत्सम् 1, 83, 11. — 5) *Spuren eines Bisses* VĀG. beim Schol. zu ÇĪC. 4, 29; vgl. Stenzler, De lexicogr. s. principis, 22. — 6) N. pr. eines Flusses MBH. 6, 327 (VP. 182).

दिशस् f. = 2. दिष् *Himmelsgegend* MATHURĀN. zu AK. ÇKDR.

दिशस् (दिशस्पति) v. l. des SV. I, 3, 2, 5, 5. II, 5, 2, 2, 4 statt दशस् (दशस्पति) des RV.

दिशा f. 1) = 2. दिष् *Richtung, Himmelsrichtung* VOP. 4, 2. दिशया MBH. 13, 1390. दिशामु 4, 1716. 12, 10454. दिशाभिर्विदिशाभिश्च HARIV. 2243. Vgl. सत्तर°, अवात्तर°. — 2) N. pr. der Gemahlin des Rudra Bhīma VP. 59.

दिशागज (दि° + गज) m. = दिक्कारिन् HARIV. 8221. 12970. R. 1, 41, 13. 20. 42, 7. 9. 10.

दिशाचतुस् (दि° + च°) m. N. pr. eines Sohnes des Garuda MBH. 5, 3595. दिशापाल (दि° + पाल) m. *Hüter eines Himmelsstriches* HARIV. 273. = दिशागज R. 1, 41, 16. 42, 11.

दिशोदण्ड (दिशस्, gen. von 2. दिष्, + द°) m. P. 6, 3, 21, VArtt. 1. *Stab einer Himmelsgegend, wohl Bez. einer best. Himmelserscheinung*; vgl. दण्ड 8.